जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – दिसम्बर 2022 ।। अंक – 29 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

फूलकुमारी बनी मखाना उद्यमी (पृष्ठ – 02)

स्वास्थ्य सहायता केंद्र का संचालन कर रही दीदियां (पृष्ठ – 03)

जीविका स्वास्थ्य सेवा केंद्र सुलभ इलाज में सहयोग की पहल (पृष्ठ – 04)

मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना अंतर्गत बैग क्लस्टर का विकास

बिहार में छोटे उद्यमियों को प्रोत्साहित करने के लिए मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना शुरू की गई है। अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के युवाओं एवं महिलाओं के लिए प्रारंभ की गई इस योजना के अंतर्गत उद्योग स्थापित करने हेतु राज्य सरकार 10 लाख रुपए की प्रोत्साहन राशि प्रदान करती है। जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं को 'मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना' के अंतर्गत चयनित कर उन्हें बैग निर्माण कार्य से जोड़ा जा रहा है। इस योजना के तहत ही मुजफ्फरपुर में बैग क्लस्टर का विकास किया जा रहा है।

मुजफ्फरपुर में बैग क्लस्टर के विकास के लिए अब तक उठाए गए प्रमुख कदम–

- इस गतिविधि के तहत सामुदायिक संगठनों के माध्यम से 39 उद्यमियों की पहचान की गयी है। इनमें से 30 उद्यमी मुजफ्फरपुर जिले से हैं, जबकि समस्तीपुर जिले से 5, दरभंगा से 3 एवं वैशाली जिले से 1 उद्यमी चयनित किए गए हैं।
- बैग क्लस्टर के अंतर्गत सभी उद्यमी दीदियों द्वारा 24 सिलाई यंत्रों का संचालन करना है। इसके लिए 1340 सिलाई मास्टर दीदियों का चयन सामुदायिक संगठनों द्वारा किया गया है। इनमें से 936 सिलाई मास्टर दीदी का चयन 'हाईस्पिरिट' कंपनी के मूल्यांकन के बाद किया गया है। इसके अंतर्गत 225 दीदियों को 21 दिवसीय प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया है।
- बेला औद्योगिक क्षेत्र में वर्कशेड की दूरी को ध्यान में रखते हुए निकटवर्ती मुशहरी एवं कुढ़नी क्षेत्र से ही ज्यादातर श्रमिकों का चयन किया जा रहा है।
- दो मशीन ऑपरेटरों को एक हेल्पर का सहयोग मिलेगा।
- 21 से 30 नवंबर 2022 तक सीआईएमपी, पटना द्वारा आयोजित उद्यम विकास कार्यक्रम में 39 उद्यमियों को प्रशिक्षित किया गया। इन 39 उद्यमियों को बेला बैग क्लस्टर में 7 दिनों का ऑन–जॉब प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया।
- जीएसटी विभाग और बियाडा के साथ अभिसरण में उद्यमियों ने अपना जीएसटी और शेड क्षेत्र प्राप्त किया है।
- प्रस्तावित व्यवसाय योजना के अनुसार उद्यम स्थापित करने हेतु 10 लाख रुपये इन उद्यमियों के व्यक्तिगत चालू खाते में अंतरित किए गए हैं जिसमें 5 लाख का अनुदान एवं 5 लाख का ब्याज मुक्त ऋण है।
- चयनित इन सभी उद्यमियों को व्यवसाय योजना पर तीन दिवसीय कार्यशाला सह प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया है ताकि वे इस उद्यम को सुगमतापूर्वक स्थापित कर सकें।
- प्रत्येक उद्यमी को एक माह में छब्बीस दिनों के लिए 24 मशीनों का प्रबंधन करना होता है, जिससे प्रति दिन कम से कम सोलह बैग प्रति मशीन का उत्पादन हो।
- मुख्यमंत्री क्लस्टर विकास योजना के तहत कॉमन फैसिलिटी सेंटर की स्वीकृति के लिए डीपीआर उद्योग विभाग को प्रस्तुत किया गया है। कॉमन फैसिलिटी सेंटर की सेवाओं को मजबूत बनाने के लिए शीघ्र ही निर्माता कंपनी का गठन किया जाएगा।

इन उद्यमी दीदियों एवं सिलाई मास्टर के संचालन, उन्नयन एवं प्रबंधन हेतु प्राथमिक स्तर पर उत्पादक समूह का गठन किया जा रहा है तथा निर्माता कंपनी का गठन करने की योजना है। समुह एवं कंपनी का उद्देश्य महिला उद्यमियों को आवश्यक सहायता एवं संस्थागत विकास प्रदान करना है। मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना के तहत बैग क्लस्टर का संचालन 4 दिसम्बर 2022 से शुरू करने के लिए जीविका तत्परता के साथ कार्य कर रही है।

फूलकुमारी बनी मखाना उद्यमी

दरभंगा जिला के बहादुरपुर प्रखंड अंतर्गत बसंतपुर पंचायत की फूलकुमारी देवी के पति गांव में मजदूरी करते थे। अचानक पति के बीमार हो जाने से परिवार के समक्ष आर्थिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो गयी। ऐसी परिस्थिति में फूलकुमारी ने घूंघट प्रथा को दरकिनार कर परिवार की कमान संभाली। वह अपने सर पर टोकरी लेकर गली–गली घूमकर सब्जी बेचने लगी। साथ ही वह खेत में दैनिक मजदूरी भी करती थी। इनसे होने वाली आय से वह किसी तरह अपने परिवार का गुजारा करती थी। इसी बीच, अधिक मजदूरी की चाहत में वह हरियाणा चली गयी। कुछ वर्ष बाद जब वापस बिहार लौटी तब वह पूर्णिया जिले में मखाना फोड़ने वाले मजदूर के रूप में कार्य करने लगी।

इसी दरम्यान फूलकुमारी देवी संतोषी जीविका स्वंय सहायता समूह से जुड़ गयी। समूह से जुड़ने के बाद उसने 20 हजार रुपये का ऋण लेकर अपने गांव में ही मखाना फोड़ने का कार्य प्रारंभ किया। दीदी की मेहनत और लगन से कार्य का विस्तार होता गया। मांग में बढ़ोत्तरी होने और आवश्यकतानुसार वह मजदूर रखकर मखाना फोड़ने का काम करवाने लगी। इससे उनकी आमदनी बढ़कर 10 हजार रुपये प्रतिमाह हो गयी। वह मखाना का उत्पादन और प्रोसेसिंग कर इसे थोक दुकानदारों को बेच देती थी। लेकिन इस व्यवसाय में अधिक मुनाफा खुदरा बिक्री में है। पूंजी के अभाव में वह शहर में दुकान लगाने में सक्षम नहीं थी। इसी बीच, जीविका के सहयोग से उन्हें प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम योजना के तहत 30 हजार रुपये का ऋण प्रदान किया गया। इस मदद से फूलकुमारी ने दरभंगा शहर के लहेरियासराय में सड़क किनारे मखाना की दुकान चलाने लगी। मखाना बेचकर फूलकुमारी अच्छी आय अर्जित करने लगी है। फूलकुमारी मखाना के साथ–साथ मछली पालन का कार्य भी करने लगी है। जाहिर है इससे उनकी आमदनी में बढ़ोतरी हुई है। अब उनके जीवन स्तर में सकारात्मक बदलाव आया है और सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा दे पा रही हैं।

स्वरोजगार से प्रभा हुई आर्थिक रूप से सशक्त

अरवल जिले के कलेर प्रखंड में कमता पंचायत के सहाय बीघा की रहने वाली प्रभा देवी एक मेहनतकश और लगनशील जीविका दीदी है। साल 2018 में प्रभा लक्ष्मी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। प्रभा समूह की सारी गतिविधियों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती है। प्रभा दीदी अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को और मज़बूत करना चाह रही थी। लेकिन पूंजी के अभाव में वह कुछ आगे नहीं कर पा रही थी। ऐसे में उन्होंने अपनी समस्या को समूह के साप्ताहिक बैठक में रखा। समूह से सहयोग के आश्वासन के बाद उन्होंने काफी विचार–विमर्श के उपरांत आटा–चक्की मशीन से रोजगार का मन बनाया। इस आजीविका को शुरू करने के लिए उन्होंने वर्ष 2021 में अपने समूह से 45,000 रुपये का ऋण लिया। ऋण राशि में से 35,000 रुपये की लागत से प्रभा ने एक ऑटोमैटिक आटा चक्की मशीन खरीद लिया। इसके बाद उन्होंने अपने घर में प्रोसेसिंग इकाई स्थापित किया। इसके बाद प्रभा दीदी गेहूं, चावल, मशाला और दर्रा की पिसाई का काम करने लगी है। इस मशीन से गेहूं पिसाई के बाद चोकर स्वतः ही चलकर अलग हो जाता है। धीरे–धीरे उनके यहाँ अनाज पिसवाने हेतु ग्राहकों की काफी भीड़ होने लगी है। प्रतिदिन वह ग्राहकों के लगभग 2.5 क्विंटल अनाज की पिसाई कर लेती हैं। पिसाई के बदले मिलने वाले पैसों से उन्हें अच्छी आमदनी हो जाती है। आटा–चक्की मशीन से होने वाली आय से प्रभा देवी समूह से लिए गए ऋण को ससमय वापस कर रही हैं। प्रभा देवी इस रोजगार से प्रतिमाह लगभग 15,000 रुपये तक की आमदनी कर लेती हैं। वह समूह एवं ग्राम संगठन की अन्य दीदियों को भी रोजगार के लिए प्रेरित करती रहती हैं। प्रभा अपने रोजगार से काफी खुश हैं और अपने परिवार का पालन–पोषण बेहतर तरीके से कर रहीं हैं। अपनी सफलता के लिए वह जीविका परियोजना को दिल से धन्यवाद देती हैं।

...अब दीदियों को इलाज के नहीं पड़ेगा भटकना

भागलपुर के मायागंज स्थित जवाहरलाल नेहरु मेडिकल कॉलेज अस्पताल में 5 सितंबर 2022 को राज्य का पहला 'जीविका स्वास्थ्य सहायता केंद्र/जीविका हेल्प डेस्क' प्रारंभ हुआ। भागलपुर के जगदीशपुर प्रखंड में गठित नई उड़ान जीविका महिला संकुल संघ द्वारा संचालित जीविका हेल्प डेस्क से मायागंज अस्पताल में इलाज कराना सुलभ हुआ है। सुबह 6 बजे से रात 10 बजे तक जीविका स्वास्थ्य सहायता केंद्र में दो शिफ्ट में दो जीविका स्वास्थ्य मित्र– नुशरत खान और शालिनी कुमारी कार्यरत हैं। दोनों स्वास्थ्य मित्र काफी लगन, मेहनत एवं तत्परता से मरीजों के बेहतर इलाज में सहायता प्रदान करती हैं।

स्वास्थ्य सहायता केंद्र के माध्यम से शुरुआती 15 दिनों में ही 160 से ज्यादा मरीजों को स्वास्थ्य से संबंधित सहायता पहुंचाई गई। मरीज के परिजनों की सुविधा के लिए मायागंज अस्पताल के जीविका स्वास्थ्य सहायता केंद्र का मोबाइल नंबर– 9065732022 भी जारी किया गया है। 15 दिनों के ट्रायल के दौरान 250 से ज्यादा मरीजों ने इस नंबर पर कॉल किया। इस नंबर पर अब तक कुल 962 लोगों ने फोन कर सहायता मांगी, जिसके आधार पर मरीजों को डॉक्टर से दिखाने के अलावा अन्य प्रकार की सहायता प्रदान की गई है।

स्वास्थ्य सहायता केंद्र में कार्यरत स्वास्थ्य मित्र नुशरत बताती हैं कि–'अब तक कुल 625 मरीजों को डॉक्टर से दिखलाने हेतु ओपीडी में नंबर लगवाने, जांच करावाने, दवाई उपलब्ध करवाने, आवश्यकतानुसार स्लाइन या ऑक्सीजन की उपलब्धता सुनिश्चित करने के साथ ही बेड की आपूर्ति में मदद की गई है। इससे मरीज के परिजनों को अनावश्यक भाग–दौड़ नहीं करना पड़ा और न ही परेशान होना पड़ा।' वह बताती हैं कि आपातकालीन स्थिति में अस्पताल आने पर मरीजों के लिए बेड की व्यवस्था करने, स्लाइन या ऑक्सीजन की उपलब्धता, डॉक्टर एवं नर्स से संपर्क स्थापित कर उन्हें समय पर बेहतर इलाज करवाने में मदद का प्रयास किया जाता है।

स्वास्थ्य सहायता केंद्र का संचालन कर रही दीदियां

किसी को घर की दहलीज पार नहीं करने की कसक रहती थी तो किसी को परिवार का सहयोग नहीं मिलने का। लेकिन आज परिस्थितियां काफी बदल चुकी है। जीविका से जुड़ी कई ऐसी महिलाएं हैं, जिन्होंने अपनी मेहनत के बल पर अपने सपनों को साकार किया है। जीविका परियोजना की बदौलत वह मुखर होकर हमारे सामने हैं। जीविका में कार्य कर रही कई ऐसी महिलाएं हैं, जिन्होंने शुरूआत तो स्वयं सहायता समूह के सदस्य के रूप में की थी, लेकिन आज वह परियोजना में ही जीविका मित्र, एमबीके, सीएफ, एचएनएस एमआरपी, सीएनआरपी के साथ–साथ अब जीविका स्वास्थ्य सहायता मित्र बनकर मरीजों की मदद भी कर रही हैं।

1 अक्टूबर 2022 को सदर अस्पताल, जमुई में जीविका के सौजन्य से 'जीविका स्वास्थ्य सहायता केंद्र' का शुभारंभ किया गया। जीविका स्वास्थ्य केंद्र के खुलने से अब दूर–दराज से आने वाले मरोजों को इलाज कराने के लिए इधर–उधर भटकना नहीं पड़ रहा है। सहायता केंद्र के संचालन हेतु जारी मोबाइल न. 9263950331 पर भी अब मरीज फोन के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही इसके प्रचार–प्रसार हेतु जीविका समूह की सभी बैठकों में फोन नंबर को साझा किया जा रहा है। जीविका स्वास्थ्य मित्र अस्पताल में मरीजों का रजिस्ट्रेशन कराने, डॉक्टरों से जाँच करवाने, पैथोलॉजी जाँच से लेकर भर्ती करवाने में मरीजों की सहायता कर रही हैं। हेल्प डेस्क के माध्यम से अभी तक (1 अक्टूबर से लेकर 19 नवम्बर तक) 671 मरीजों को इलाज में मदद मिली है।

केंद्र के संचालन के लिए दो स्वास्थ्य मित्र निशु और रिन्जू को नियुक्त किया गया है। दोनों स्वास्थ्य मित्र दो शिफ्ट में सुबह 6 बजे से रात्रि दस बजे तक मरीजों को इलाज में मदद करती हैं। दोनों स्वास्थ्य मित्रों का पटना के एम्स में दो दिनों का आवासीय प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के उपरांत दोनों की काउन्सलिंग के बाद सहायता केंद्र में नियोजित किया गया।

जीविका स्वास्थ्य सेवा केंद्र
सुलभ इलाज में सहयोग की पहल

ग्रामीण क्षेत्र के गरीब परिवारों के लिए शहर के बड़े अस्पतालों में इलाज कराना काफी मुश्किल भरा होता है। ऐसे परिवारों को बीमारियों की जांच करवाने से लेकर इलाज करवाने एवं दवाइयों की उपलब्धता हेतु अस्पतालों में काफी भाग–दौड़ का सामना करना पड़ता है। उनकी इन परेशानियों को दूर करने के लिए बिहार के चिन्हित मेडिकल कॉलेजों एवं जिला अस्पतालों में जीविका हेल्प डेस्क यानी 'जीविका स्वास्थ्य सहायता केंद्र' की परिकल्पना की गई है। यहां अस्पतालों में इलाज हेतु आने वाले गरीब परिवारों को सहायता प्रदान किया जा रहा है। जीविका हेल्प डेस्क का संचालन स्थानीय संकुल स्तरीय संघ के द्वारा किया जा रहा है। स्वास्थ्य मित्र अस्पताल में इलाज हेतु आने वाले गरीब परिवरों को आवश्यक परामर्श एवं अन्य प्रकार के सहयोग प्रदान करती हैं।

स्वयं सहायता समूह के सदस्यों तथा उनके परिवार एवं अन्य सदस्यों को बेहतर चिकित्सकीय सहायता उपलब्ध कराने हेतु आवश्यक सहयोग ससमय प्रदान करना इसका मुख्य उद्देश्य है। इसके अलावा उपचार संबंधी विभिन्न प्रक्रियाओं में उन्हें अनावश्यक भटकना नहीं पड़े, इसके लिए हेल्प डेस्क के माध्यम से ऐसे परिवारों को उचित परामर्श भी दिया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो बड़े अस्पतालों या जिला अस्पतालों में इलाज कराने की प्रक्रिया में सुगमता प्रदान करने के उद्देश्य से जीविका स्वास्थ्य सहायता केंद्र की स्थापना की जा रही है।

जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़े परिवार के सदस्यों एवं अन्य सदस्यों के अस्पताल आने की स्थिति में उनका पंजीकरण कराने और संबंधित चिकित्सक से दिखलाने में सहयोग किया जाता है। चिकित्सक के परामर्श के आधार पर बीमार व्यक्ति की जांच, आवश्यकतानुसार रक्त एवं ऑक्सीजन की उपलब्धता, दवा और भोजन आदि सुविधा दिलवाने में सहयोग प्रदान किया जाता है। साथ ही अस्पताल प्रबंधन, चिकित्सक, नर्स, ए.एन.एम. रेडियोलॉजी व पैथोलॉजी कर्मी, पंजीयन कर्मी तथा अन्य कर्मियों के साथ बेहतर समन्वय स्थापित किया जाता है ताकि मरीजों का बेहतर इलाज हो सके। अस्पताल में भर्ती मरीजों का नियमित तौर पर हाल–चाल लेने के अलावा तमाम प्रकार की सहायता प्रदान की जा रही है। इसके लिए प्रत्येक जिला अस्पतालों में स्थापित होने वाले जीविका हेल्प डेस्क में अलग–अलग शिफ्ट में दो स्वास्थ्य मित्र कार्य करते हैं। समूह से जुड़े सदस्यों या उनके परिवार के किसी सदस्य के अस्पताल में भर्ती होने की स्थिति में स्वास्थ्य मित्र द्वारा विहित प्रपत्र में भर्ती होने वाले रागियों से संबंधित सूचनाएं संधारित की जाती है।

बिहार में इस समय कई बड़े मेडिकल कॉलेज अस्पतालों में स्वास्थ्य सहायता केंद्र संचालित हो रहे हैं। वहीं कई जिला अस्पतालों में स्वास्थ्य मित्र के चयन की प्रक्रिया चल रही है। भागलपुर के मायागंज अस्पताल में 5 सितंबर 2022 को राज्य का पहला 'जीविका स्वास्थ्य सहायता केंद्र' प्रारंभ हुआ। अबतक कुल 634 मरीजों को सहायता प्रदान की गई है। बिहार में फिलहाल जमुई, मोतिहारी एवं बक्सर के जिला अस्पतालों में और पूर्णिया, बेतिया, मधेपुरा एवं दरभंगा के चिकित्सा महाविद्यालयों में जीविका स्वास्थ्य सहायता केंद्र कार्यरत है। इसके अलावा बिहार के सभी जिला अस्पतालों में यह सुविधा जल्द शुरू होने वाली है। इसके लिए संबंधित अस्पतालों में स्वास्थ्य मित्र के चयन की प्रक्रिया जारी है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, सिवान
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय